International Journal of Creative Research Thoughts
Volume 1, Issue.5, May 2013
ISSN:-2320-2882

ORIGINAL ARTICLE

शैली विज्ञान और वक्रोक्ति : एक विश्लेषण

संतोष डेहरिया

सारांश

शैली विज्ञान एवं वक्रोक्ति का परिचय देते हुए दोनों की अवधारणाओं को स्पष्ट किया गया है। तत्पश्चात् तथ्यों को आमने सामने रखकर तुलनात्मक विवेचन द्वारा प्राप्त निष्कर्षों को प्रस्तुत किया गया है। तथ्यों की पुष्टि हेतु प्रयुक्त कोटेशन के लिए फुटनोट पद्धति अपनाई गई है।

प्रस्तावना–

जैसा कि हमारा विषय है शैली विज्ञान और वक्रोक्ति इसके अनुसार सबसे पहले हम शैली विज्ञान को लेते हैं। शैली वैज्ञानिक चिंतन में शैली विज्ञान की मुख्यतः दो शाखाओं का उल्लेख मिलता है–एक शैली माप क्रमी (स्टायलोमीट्रिक) और दूसरी ' शैली विज्ञान' (स्टाइलिस्टिक्स) शैली मापक्रमी शाखा के अध्ययन का संबंध भाषाविज्ञान से है और यह शाखा जितनी 'सांख्यकीय' है, उतनी आलोचनात्मक नहीं । अतः प्रस्तुत संदर्भ में हमारे लिए दूसरी शाखा' शैली विज्ञान' यहां प्रयोजनीय है।

शैली वैज्ञानिक विश्लेशण में ' शैली परक' अभिलक्षणों को कथ्य की सामिप्रायता से जोड़कर उपस्थित किया जाता है। पाश्चात्य शैली शास्त्री लिविन का इस संदर्भ में कथन है कि ''यह वह प्रकार है जिससे शैली का विश्लेषण साहित्यिक कृति की संपूर्ण प्रभाव की व्याख्या को साथ लेकर चलता है, यहां सौन्दर्य बोध और मूल्यवत्ता का विवेचन भी शैली –विश्लेषण में सिमट आता है। इस दिशा विशेष में शैली का विश्लेषण साहित्य –कृति की बहुस्तरीय अनुक्रिया को उजागर करने वाला होता है।''[1]

शैली आधारित उक्त शैली वैज्ञानिक विश्लेषण की वस्तुनिष्ठता को प्रकट करने के लिए अनेक आधुनिक मतों का प्रतिपादन हुआ है जिसने '' शैली '' को प्रतिमान से विपथन कहा है (सीबाक, बर्नाउन्लाख) तो किसी ने 'संदर्भ बद्ध प्रतिमान से विपथन को शैली का मूलाधार माना है।[2]

क्लींथब्रम्स और राबर्ट पेनवारेन चयन को शैली का अविभाज्य अंग मानते हैं। शैली को वैयक्तिक वैशिष्ट्म मानने वाले विद्वानों के द्वारा रचयिता की वैयक्तिक विशेषता को जो उसे अन्य रचनाकारों से पृथक करती है– शैली कहा गया है। वास्तव में प्रत्येक रचनाकार के अपने विशिष्ट भाषिक प्रयोग और चयन होते है।[3] व्याकरण की संभावनाओं का विशेष उपयोग भी शैली मान्य किया गया है इस प्रकार शैली वैज्ञानिक अलोचना के संदर्भ में शैली की परिभाषा व्यापक है। इसके अंतर्गत चयन, विचलन, विपथन वैयक्तिक रुचि व्याकरणिक संभावनाओं का उपयोग आदि सबका समाहार हो जाता है।[4] कुल मिलाकर ''शैली विज्ञान का प्रमुख कार्य है उन संभावनाओं की तलाश करना जो सर्जनात्मक साहित्य में छिपी रहती है। यह साहित्य अध्ययन का वह भाषावासी आयाम है जो साहित्य के भीतर प्रकोष्ठों को उजागर करता है, वह कृति के अध्ययन के लिए कृति में डुबकी लगाता है। कृति को अपने में पूर्ण इकाई मान लेता है और रचना के समूचे संसार को उसके भीतर से उभारता है। रचना की खूबियों का बयान करने के लिए उसे

किसी मदद की जरुरत नहीं पड़ती । रचना के अंदर प्रविष्ट होने के लिए उसे मनोविज्ञान, समाज विज्ञान जैसी किसी सीढ़ी की आवश्यकता नहीं है।''[5] आधुनिक शैली विज्ञान का स्वरुप और भारतीय साहित्य चिंतन के परिप्रेक्ष्य में शैली वैज्ञानिक चिंतन की दशा और दिशा को स्पष्ट कर लेने के पश्चात् हम अपने दूसरे विचारणीय बिन्दु वक्रोक्ति पर आते हैं।

वक्रोक्ति सिद्वांत की स्थापना दसवीं शताब्दी में आचार्य कुन्तक ने की थी, किन्तु इसके पूर्व भी वक्रोक्ति सिद्धांत अपने बीज रुप में विद्यामान था । आचार्य कुंतक से पूर्व वाण, भामह, दण्ड़ी, वामन, रुद्रट तथा ध्वनिकार आनंदबर्द्धन आदि ने भी वक्रोक्ति शब्द का प्रयोग किया था, किन्तु तब तक वक्रोक्ति को न तो काव्य की आत्मा के रुप में मान्य किया जा सका था और ना ही उनका स्वरुप इतना व्यापक और गहन हो सकता था। वास्तव में वक्रोक्ति सिद्धांत की मौलिक चिंतना पहली बार आचार्य कुंतक में ही प्रस्फुटित हुई, उन्हीं ने इसे काव्य शास्त्रीय संप्रदाय के रुप में प्रतिष्ठित किया । वक्रोक्ति शब्द वक्र+उक्ति से बना है। साहित्य में इसका प्रयोग–वाक्दल, क्रीड़ा –कलाप अथवा परिहास कथन के रुप में हुआ है। आचार्य कुंतक के अनुसार यही 'वक्रोक्ति' काव्य की आत्मा है, उन्होंने वक्रोक्ति की परिभाषा करते हुए लिखा है–

''वक्रोक्तिः प्रसिद्धाभिधान व्यक्तिरेकिणी विचित्रैवाविधा कीदृशी वैदग्ध्यभंगी शणिति ।
वैदग्ध्यं विदग्धभाव, कविकर्म कौशलं तस्य भंगी विच्छिति तथा शणितिः।।''

अर्थात् प्रसिद्ध उक्ति से भिन्न विचित्र वर्णन शैली को वक्रोक्ति कहते हैं। वैदग्धपूर्ण शैली के माध्यम से व्यक्त उक्ति ही वक्रोक्ति कहलाती है, और वाग्वैदग्ध का आशय है विदग्धता–कविकर्म कौशल, उसकी भंगिमा अथवा चारुता उसके आधार पर कही गई उक्ति ।[6]

इस प्रकार कुंतक का वक्रोक्ति से आशय 'विचित्र अभिधार्थ' से है और विचित्र का अर्थ है प्रसिद्ध कथन पद्धति से भिन्न पद्धति का प्रयोग । कवित कौशल के लिए कुंतक 'कवि व्यापार' शब्द का प्रयोग करते हैं– '' शब्दार्थो सहितों वक्र कवि व्यापार शालिनी प्रतिमानता।'' वक्रोक्ति के लिए कुन्तक यह आवश्यक मानते हैं कि उसमें सहृदय के मन को अह्लादित करने की क्षमता होनी चाहिए । इस प्रकार वक्रोक्ति एक विचित्र उक्ति है। इसकी सामान्य विशेषताओं को हम निम्नलिखित बिंदुओं में रेखांकित कर सकते हैं :–

1. कुंतक की वक्रोक्ति या विचित्र उक्ति सामान्य कथन शैली से भिन्न होती है।
2. यह विचित्र उक्ति लोक अथवा शास्त्र में प्रयुक्त शब्द–अर्थ प्रयोग से भिन्न ढंग की है।
3. इस प्रकार की विचित्र उक्ति की सर्जना कवि प्रतिभा से ही संभव है।
4. यह विचित्र उक्ति सहृदय के मन को आह्लादित करने वाली होती है।

आचार्य कुंतक इस वक्रोक्ति को समस्त काव्य व्यापार का मूलाधार मानते हैं। उनके अनुसार काव्य में शब्द और अर्थ प्रत्यक्षतः यही दो तत्व होते हैं और इन तत्वों का अलंकरण करने वाला तत्व वक्रोक्ति है। काव्य में हमें जहाँ कहीं भी सौन्दर्य अथवा चमत्कार के दर्शन होते हैं, यह वस्तुतः वक्रोक्ति के कारण ही होते हैं। वक्रोक्ति के अभाव में काव्योचित सौन्दर्य की सृष्टि संभव नहीं है।''[7]

कुंतक ने वक्रोक्ति के मुख्यतः छह भेद किये हैं, जो पूर्णतः वैज्ञानिक आधार लिए हुए है। इन्हीं छः भेदों में काव्य की लघुतम इकाई वर्ण से लेकर महाकाव्य तक वक्रोक्ति का प्रसार माना है। ये छह भेद हैं।

1. वर्ण विन्यास वक्रता 2. पदपूर्वार्द्ध वक्रता 3. पद परार्द्ध वक्रता 4. वाक्यवक्रता
5. प्रकरणवक्रता 6.प्रबंधवक्रता ।

तुलनात्मक अनुशीलन %&जब हम इन दोनों सिद्धांतों – शैली विज्ञान एवं वक्रोक्ति की तुलना करते हैं तो साम्य तथा वैषम्य दोनों ही लक्षित होते हैं।

1. साम्य :–

1. दोनों ही सिद्धांत वस्तु परक एवं भाषा केन्द्रित हैं।
2. शैली विज्ञान तथा वक्रोक्ति दोनों में ही 'रचना कौशल' को ही सर्वाधिक महत्व दिया गया है।
3. व्यक्ति तत्व की अपेक्षा न तो शैली विज्ञान ने की है और न ही वक्रोक्ति सिद्धांत। दोनों ही वैशिष्ट्य के सिद्धांत को मानते हैं और रचनाकार के व्यक्तित्व को पर्याप्त महत्व देते हैं।
4. स्वभावोक्ति स्वभावकों दोनों ने सर्वोच्च स्थान दिया है।
5. एक महत्वपूर्ण समानता यह है कि दोनों ही काव्य को 'आत्माभिव्यक्ति' न मानकर कवि की निपुणता का परिणाम मानते हैं।
6. शैली विज्ञान में शैली तथा वक्रोक्ति में उचित की वक्रता कृति की आलोचना का मूलाधार है। ये दोनों ही तत्व अपने स्वरुप व प्रकार्य में समानता (गहरे में) रखते हैं। दोनों का ही आधार मानकों का अतिक्रमण है।
7. दोनों ही सिद्धांत अपने विश्लेषण में केवल 'शिल्प' तक सीमित नहीं है यद्यपि वस्तुनिष्ठता है, तथापि ये कृति के कथ्य एवं अंतः सत्य तक को उद्घाटित करते हैं। इसे आह्लाद, काव्य सौन्दर्य नामों से अभिहित किया गया है।
8. दोनों वर्ण से प्रबंध व प्रोक्ति तक व्यापित हैं।
9. दोनों सिद्धांत सामान्य भाषा एवं काव्य भाषा में भेद मानते हैं।

2. वैषम्यः–

1. वक्रोक्ति सिद्धांत भारतीय संदर्भ से संबद्ध है, इसमें रस तत्व को मान्य किया
गया है। जबकि पाश्चात्य में इसकी संकल्पना न होने के कारण शैली विज्ञान में रस शब्द नहीं है, इसके स्थान पर सौन्दर्य है।
2. वर्तमान शैली विज्ञान का आधार पाश्चात्य चिंतन है, जबकि वक्रोक्ति पूर्णतः भारतीय चिंतन की भूमि पर अवस्थित है।

निष्कर्ष

उक्त विवेचन के आधार पर स्पष्ट तौर पर कहा जा सकता है कि शैली विज्ञान एवं भारतीय 'वक्रोक्ति सिद्धांत' में परस्पर साम्य अधिक एवं गहन है बल्कि कहें तो अति न होगी कि ये एक दूसरे के विकल्प व पूरक होने का सामर्थ्य रखते हैं। कुल मिलाकर निष्कर्ष यह है कि शैली विज्ञान एवं वक्रोक्ति सिद्धांत के परस्पर सहयोग से एक नवीनतम आधुनिक समीक्षा शास्त्र समग्रता में विरचित किया जा सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि दोनों को भारतीय तथा पाश्चात्य साहित्य चिंतन के धरातल पर रखकर गंभीरता पूर्वक विचार किया जाए।

अंत में हम यह भी कहना चाहेंगे कि सुदीर्घ अतीत में भारतीय काव्य शास्त्रीय चिंतन का आधार भी भाषा तात्विक रहा है और यहां के प्रायः सभी काव्य शास्त्रियों का काव्य विश्लेषण भाषा केन्द्रित रहा है।

संदर्भ ग्रंथ

1. डॉ.लक्ष्मीलाल बैरागी, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के कृतित्व का शैली वैज्ञानिक अध्ययन, संघी प्रकाशन जयपुर, 1980 पृ.,12.
2. वही, पृ. 19.
3. वही, पृ. 19.
4. वही, पृ. 24.
5. वही, पृ. 29–30.
6. डॉ.कृष्णदेव शर्मा, भारतीय काव्य शास्त्र, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा,1995,पृ.109.
7. वही, पृ. 110.